प्रातःक्लास 22/6/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। बच्चों का अभी पढ़ाई में ध्यान किसमें जाना है? सर्वगुण सम्पन्न..... यह सभी गुण धारण करनी है। जांच करनी है हमारे में यह सभी गुण है; क्योंकि जो जानते हैं वहां ही ध्यान जावेगा तुम बच्चों का। अभी यह है पढ़ने और पढ़ाने पर मदार। अपने दिल से पूछना है कि हम कितने को पढ़ाते हैं। सम्पूर्ण देवता तो कोई बना नहीं है। चन्द्रमा जब सम्पूर्ण हो जाता है नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार है। यह तो बच्चे भी समझ सकते हैं, टीचर भी समझ सकते हैं। यह तो जानते हैं इम्तहान में अभी देरी है। तो भी एक–एक बच्चे पर नज़र धरते हैं। क्या कर रहे हैं। अपने तकदीर से कितने ऊँच पद बना रहे हैं। सभी फूलों तरफ देखते हैं। फूल तो सभी हैं ना। बग़ीचा है ना। हरेक अपनी अवस्था को जानते हैं। अति इन्द्रिय सुखमय जीवन हरेक को अपनी–2 भासती होगी। एक तो बाप को बहुत–2 याद करना है। याद करने से ह(ी) हम रिर्टन होते हैं। तमोप्रधान से सतोप्रधान में। सतोप्रधान बनने लिए तुम बच्चों को बहुत सहज उपाय बताया हूँ। याद की यात्रा। हरेक अपने दिल से पूछे हमारी याद की चार्ट ठीक है और किसको भी आप समान बनाता हूँ; क्योंकि ज्ञान बुलबुल हो ना। कोई बुलबुल हैं, कोई मैना हैं, कोई पैरेट हैं, कोई क्या हैं। तुमको कबूतर नहीं पैरेट बनना है। अपने अन्दर से पूछना बहुत सहज है। कहां तक हम बाबा को याद करते हैं। कहां तक अतिइन्द्रिय सुख में रहते हैं। मनुष्य से देवता बनना है ना। मनुष्य तो मनुष्य ही होते हैं। मेल अथवा फिमेल दोनों देखने में तो मनुष्य ही आते हैं। फिर तुम दैवी गुण धारण कर देवता बनते हो। तुम्हारे सिवाय और कोई देवता बनने वाला ही नहीं। यहां आते ही हैं दैवी घराणें के भांति बनने। वहां भी तुम दैवी घराणें के भांति हो। घर की भांति हो ना। तुम्हारे वहां कोई भी राग, द्वेश आदि नहीं होता। ऐसे दैवी परिवार के तुम बनते हो। सारी दुनियाँ को ही कहा जाता है दैवी परिवार। अभी तुम बच्चे जानते हो हम दैवी परिवार बनने लिए खूब पुरुषार्थ करते हैं। पढ़ना भी कायदे अनुसार है। कब मिस न करना चाहिए। भल बीमार हो तो भी बुद्धि में शिवबाबा की याद हो। इसमें तो मुख चलाने की बात ही नहीं। आत्मा जानती है हम शिवबाबा के बच्चे हैं। बाबा हमको ले चलने लिए आये हैं। यह प्रैक्टिस बहुत अच्छी चाहिए। भल कहां भी परे हो; परंतु बाप की याद में हो। बाप आये ही हैं सुखधाम–शान्तिधाम ले जाने लिए। कितना सहज है। बहुत हैं जो जास्ती ध(ा)रणा नहीं कर सकते हैं। अच्छा याद करो। यहां यह सभी बच्चे बैठें हैं। इनमें भी नम्बरवार हैं। हां, इतना ज़रूर है कि शिवबाबा को याद ज़रूर करते हैं। और संग तोड़ एक संग जोड़ने वाले तो सभी होंगे। और कोई की याद नहीं रहती होगी; परंतु इसमें पिछाड़ी तक पुरुषार्थ करना पड़ता है। मेहनत करनी है। अन्दर में सदैव एक शिवबाबा की ही याद रहे। कहां भी घूनमे–फिरने जाते हो तो भी अन्दर में याद बाप की ही रहे। मुख चलाने की भी दरकार नहीं। अति सहज पढ़ाई है। पढ़ाकर तुमको आप समान बनाते हैं। ऐसी अवस्था में ही तुम बच्चों को जाना है। जिस सतोप्रधान अवस्था से आये हैं उस अवस्था में फिर जाना है। सतोप्रधान अवस्था होती है सतुयग में। यह कितना सहज है समझने का। घर का काम–काज करते चलते–फिरते अपने को फूल बनाना है। जांच करनी है हमारे में कोई गड़बड़ तो नहीं। हीरे का दृष्टांत भी बहुत अच्छा है अपनी जांच करने के लिए। तुम खुद ही मैगनेफाय ग्लास हो। तो अपनी जांच करनी है। मेरे में देह अभिमान भी रिंचक भी तो नहीं है। देही अभिमानी बनने से ही हमारी अवस्था पवित्र बन जावेगी। भल इस समय सभी पुरुषार्थी हैं; परंतु एमऑबजेक्ट तो सामने है। भक्ति मार्ग में भी तुम गाते आये हो बाबा आप जब आवेंगे तो हम आप के सिवाय और कोई को याद नहीं करेंगे। बच्चे समझते हैं बेहद का बाप कल्प–2 आते हैं। अभी तो बाबा आ गया है। तो बाप ही याद दिलाते हैं। भक्ति मार्ग में तो ऐसे ही गाते आये हो। अभी मैं सम्मुख हूँ और संग बुद्धि का योग तोड़ना है। गृहस्थ व्यवहार में भी रहना है। पवित्रता की तो बात मुख्य है। कमल फूल समान बनना है। कमल फूल का दृष्टांत इसका दिया जाता है तो तालाब में रहती है। यह भी गृहस्थ व्यवहार में रहते उनसे न्यारी रहती है।

कहते हैं बाबा हम एक आपको ही याद करेंगे। अंत में और कोई की भी याद न रहे। कोई अवगुण भी न हो। जब बाप बच्चों को डायरैक्शन देते हैं, जो बच्चे उस पर चल ऐसे बनते हैं वह तो सदैव खिले रहते हैं। कब मुरझाते नहीं हैं। यह प्रैक्टिस करनी है। अभी तो ऐसे कोई नहीं कहेंगे कि हम मुरझाते नहीं हैं। माया सभी को छुई–मुई कर देती है। थोड़ी सी बात में ही रो पड़ते हैं। दुःखी हो पड़ते हैं। हरेक अपनी अवस्था को जानते हैं। बाप भी समझते हैं। सिकल(शक़्ल) से भी मालूम पड़ता है यह कितना हर्षित रहते हैं। इनको तो और कुछ सूझता ही नहीं। भल कोई समझे न समझे, जागे न जागे। बच्चों को तो जांच करनी ही है। हम कहां तक लायक बने हैं। जैसे बिच्छू जहां नरम चीज़ देखते हैं तो झट डंक मार देते हैं। उनका धंधा ही यह है। तुम्हारे में भी जो अच्छे बुद्धि वाले हैं वह अपनी जांच करते रहते हैं। स्टूडेन्ट ठीक रीति पढ़ते हैं वा नहीं। पढ़ाई पर बहुत मदार है। पढ़ाई कब मिस न होनी चाहिए। बहुत बच्चे हैं जिनको सेवन्ज (सहुलीयत) भी दिये हुये हैं। शुरू में तो मुरली बिगर रह नहीं सकते थे। अभी तो बहुत ही गुह्य गोपनीय प्वाइन्ट्स सुनाई जाती है। शुरू में नये थे तो मुरली बिगर तरफते थे। बांधेलियों को मुरली पहुँचाते थे। गायन है ना मुरली में जादू। विश्व के मालिकपने का जादू कोई कम नहीं है। इससे बड़ा जादू कोई होता ही नहीं। इससे ही तुम हीरे समान बनते हो। तुम तो मुरली पहुँचाने लिए क्या–2 युक्तियाँ रचते थे। उस समय तो वह जैसे अलफ बे पढ़ते थे। तो भी मुरली का बहुत शौक था। पढ़ाई बिगर क्या हाल होगा। यहां तो बहुत अच्छे–2 बच्चे हैं जो मुरली पर ध्यान नहीं देते हैं। जो मुरली ही रिफ्रेश करने वाली है; इसलिए टेप मशीन भी है जिसमें पूरी मुरली सुन सकते हैं। जैसे कि डायरैक्ट सुनते हैं। मुरली पढ़ने वाले शौक़ीन जो होंगे वह तो कहां से भी, कैसे भी माथा मार की मुरली ज़रूर सुनेंगे। भगवान की मुरली है। जो हमको विश्व का मालिक बनाते हैं। उनकी मुरली न पढ़ेंगे तो टीचर क्या कहेंगे। उस मुरली का तो कितना रिगार्ड होना चाहिए। बाबा को तो वण्डर लगता है। अच्छे–2 बच्चे चलते–2 ठण्ढे पर जाते हैं। माया का ऐसा तूफान लग जाता है जो मुरली सुनना ही छोड़ देते हैं। क्लास में आना ही छोड़ देते हैं। जैसे कि नफ़रत आ जाती है। माया क्या कर देती है। समझाया जाता है यह कितनी ऊँच कमाई है। इस पढ़ाई से ही तुम पदमापदमपति बनते हो। इस धन से तो अपन को बहुत आवाद करना है। कितना बड़ा भारी धन है। भगवान टीचर बन आकर पढ़ाते हैं। यह किसकी भी बुद्धि में नहीं होगा। तुम बच्चे ही समझते हो; परंतु माया बुद्धि को एकदम मार देती है। अक्षर भी नहीं समझते हैं। बाप समझाते हैं तुम आधा कल्प भक्ति करते–2 बिल्कुल ही बेसमझ बन पड़े हो। तुम ही जब सतोप्रधान देवी–देवता थे तो कितने लायक थे। अभी कितने नालायक बन पड़े हो। सुखधाम जाने के लायक ही नहीं हो। अभी मैं आया हूँ तुम बच्चों को लायक बनाने; इसलिए श्रीमत पर चलना पड़े। बाप को अच्छी रीत याद करो और पढ़ो। जैसे स्कूल में भी पढ़ते हो और टीचर को भी याद करते हो ना। बस और कोई दूसरी/तीसरी बात ही नहीं। पास होने लिए ही मेहनत कर पढ़ते हैं। यह भी पढ़ाई हैं और फिर कैरेक्टर्स भी बहुत अच्छी चाहिए। एमऑबजेक्ट तो पूरी सामने है हमको यह बनना है। इनके(ल.ना.) के कैरेक्टर्स को तो मनुष्य सारा दिन गायन करते हैं। महिमा गाते रहते हैं; परंतु वह समझते थोड़े ही हैं। कितने ढेर मन्दिर हैं। वह सभी हैं भक्ति के। भक्ति में सभी घोर–अंधियारे में ही हैं। जब तक बाप का परिचय न मिला है तब तक अंधियारा में हैं। सारी दुनियाँ के मनुष्य इस समय अंधियारे में हैं। निधर्ण के हैं ; इसलिए तुम पैगाम देते रहो। तुम बेहद के बाप के बच्चे हो ना। बोलो, बेहद का बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। फिर मुक्ति भी है जीवन मुक्ति भी है। युक्ति से सभी को पैगाम पहुँचाना है। बाबा ने कहा अखबार में भल खर्चा हो यह पैगाम पहुँचाने का। है बहुत ज़रूरी। मूल है ही अखबारों द्वारा। सभी अखबारें लिखते हैं अक्सर करके। ऐसी युक्ति रचो जो यह पैगाम सभी को मिल जाये। बोलो एक बाप को याद करो तो विकर्म विनाश हो

जाये। और पवित्र बन जावेंगे। तुम सभी आत्माएँ पवित्र थे। अभी तो कोई कह न सके कि हम पवित्र आत्मा हैं। बाप ने समझाया है पवित्र आत्माएँ होती ही हैं सतयुग में। यह पुरानी दुनियाँ अपवित्र है। एक भी पवित्र हो न सके। आत्मा जब पवित्र बन जाती है तो फिर पुराना पतित शरीर छोड़ देती है। छोड़ना ही है। आत्मा पवित्र हो जाये और शरीर पुराना रहे यह हो नहीं सकता। याद करते–करते तुम्हारी आत्मा एकदम पवित्र हो जावेगी। शान्तिधाम से हम आत्माएँ पवित्र ही आये थे। फिर जाकर गर्भ महल में बैठे। फिर इतना पार्ट बजाया। अभी चक्र पूरा किया। फिर हम आत्माएँ जावेंगी अपने घर। वहां से फिर सुखधाम में आवेंगे। वहां गर्भ महल होता है। फिर भी पुरुषार्थ करना है ऊँच पद पाने के लिए। इसके लिए यह पढ़ाई है। स्वर्ग़ हेविन तो सभी गाते हैं ना। स्वर्ग़ की स्थापना होती ही है तब जब नर्क का विनाश हो। अभी नर्क वैश्यालय विनाश हो शिवालय स्थापन हो रहा है। अभी तो सभी को वापस जाना ही है। तुम समझते हो अभी तो हम यह शरीर छोड़कर जाये नई दुनियाँ में प्रिंस–प्रिंसेज़ बनेंगे। कोई समझेंगे हम प्रजा में चले जावेंगे। इसमें बिल्कुल लाइन क्लीयर हो। एक बाप की ही याद रहे और कुछ भी याद न पड़े। इसको कहा जाता है पूरा बेगर। अपना शरीर भी याद न रहे। यह तो पुराना छी–छी शरीर है ना। यहां जीते जी मरना है। यह बुद्धि में रहना है अभी हमको वापिस अपने घर जाना है। हम अपने को भूल गये थे। अभी फिर बाप ने याद दिलाया। अभी यह नाटक पूरा होता है। बाप समझाते हैं तुम सभी वानप्रस्थी हो। सारे विश्व में जो मनुष्य मात्र हैं सभी की इस समय वानप्रस्थ अवस्था है। मैं आया ही हूँ सभी आत्माओं को वाणी से परे अवस्था में ले जाने। तुम सभी वानप्रस्थी हो। बेहद का मालिक तो मैं ही हूँ ना। सभी को वाणी से परे ले जाता हूँ। वानप्रस्थ अवस्था में जाने लिए ही तुम पुरुषार्थ करते आये हो। बाप कहते हैं अभी तो छोटे–बड़े सभी की वानप्रस्थ अवस्था है। वानप्रस्थ किसको कहा जाता है यह भी तुम जानते नहीं थे। ऐसे ही जाकर गुरु करते थे। वाणी से परे स्थान जाने लिए तुम लौकिक गुरुओं द्वारा आधा कल्प पुरुषार्थ किया है; परंतु गया कोई भी नहीं है। अभी बाप खुद कहते हैं तुम छोटे–बड़े सभी की वानप्रस्थ अवस्था है। यह एक आप ही है जो सभी को अपने घर ले चलते हैं। तुम्हारी इस समय सच्ची–2 वानप्रस्थ अवस्था है। मुक्ति के लिए मनुष्य कितनी भक्ति करते हैं। बाप कहते हैं मुक्ति तो सभी बच्चों को मिलनी ही है। गर्भ में छोटा बच्चा पड़ा होगा उनकी भी वानप्रस्थ अवस्था है। यह तो बच्चे जानते हैं पुरानी दुनियाँ का विनाश हो ना ही है। छोटे–बड़े सभी ख़त्म हो जावेंगे। बाप आये ही हैं आत्माओं को अपने घर ले जाने लिए। इसमें तो बच्चों को बहुत ही खुशी होनी चाहिए। यहां दुःख भासता है तो अपने स्वीट होम को याद करते हैं। घर जाना चाहते हैं; परंतु अकल तो है नहीं। घर का कब दीदार भी नहीं किया है। कहते हैं अभी हम आत्माओं को शान्ति चाहिए। बाप कहते हैं कितने समय के लिए चाहते हो? यहां तो हरेक बा अपना पार्ट बजाना ही है। यहां कोई शांत थोड़े ही रह सकते हैं। आधा कल्प इन गुरुओं आदि ने तुमको बहुत मेहनत कराई है। मेहनत करते, भटकते और ही अशांत बने हैं। अभी जो शांन्तिधाम का मालिक है वह आकर सभी को ले जाते हैं। पढ़ाते भी रहते हैं। भक्ति करते ही हैं निर्वाणधाम में जाने के लिए। मुक्ति के लिए कभी भी किसके दिल में नही आवेगा कि हम सुखधाम में जावें। सभी वानप्रस्थ में जाने के लिए पुरुषार्थ करते हैं। तुम तो पुरुषार्थ करते हो सुखधाम में जाने लिए। जानते हो पहले वाणी से परे स्थान ज़रूर जावेंगे। भगवान भी प्रतिज्ञा करते हैं बच्चों में तुम सभी को अपने घर ज़रूर ले जाऊँगा। जिसके लिए ही तुमने आधा कल्प भक्ति की है। अभी श्रीमत पर चलेंगे तो मुक्ति–जीवनमुक्ति में चलेंगे नहीं तो शान्तिधाम तो सभी को जाना ही है। कोई चलने चाहे वा न चाहे ड्रामा अनुसार जाना ज़रूर है; पसंद करो न करो मैं आया हूँ सभी को ज़रूर ले चलेंगे। ज़बरदस्ती भी हिसाब–किताब चुक्तू कराकर ले चलूँगा। तुम सतयुग में जाते हो बाकी सभी वाणी से परे शान्तिधाम में रहते हैं। छोड़ते कोई को

भी नहीं। नहीं चलेंगे तो भी सज़ा देकर, मार–पीट कर भी ले चलेंगे। ड्रामा में पार्ट ही ऐसा है; इसलिए अपनी कमाई कर चलना अच्छा है। तो पद भी अच्छा मिलेगा। पिछाड़ी में आने वाले क्या सुख पावेंगे। बाबा सभी को कहते हैं जाना है ज़रूर। शरीर को आग लगाकर बाकी सभी आत्माओं को ले चलेंगे। आत्माओं को ही मेरे साथ चलना है। मेरी मत पर सर्वगुण सम्पन्न 16 कला सम्पूर्ण बनेंगे तो पद भी अच्छा मिलेगा। तुमने बुलाया है ना कि आकर हम सभी को मौत दो। अभी मौत आया कि आया। बचना किसको भी नहीं है। छी–2 शरीर रहनी न है। बुलाया ही है वापस ले चलो। तो अभी बाप भी कहते हैं बच्चे इस छी–छी दुनियाँ से तुमको वापस ले जाऊँगा। तुम्हारा यादगार भी खड़ा है। दिलवाला मन्दिर है ना। दिल लेने वाले का मन्दिर। आदिदेव बैठा है। शिवबाबा भी है। बाप–दादा दोनों ही हैं। तुम जानते हो इनके शरीर में बाबा विराजमान है। तुम वहां जाते हो, आदिदेव को देखते हो। तुम्हारी आत्मा जानती है यह तो बाप–दादा बैठे हैं। इस समय तुम जो पार्ट बजा रहे हो इसकी निशानी यादगार खड़ी है। महारथी, घोड़ेसवार, प्यादे भी हैं। वह है जड़, यह है चैतन्य। ऊपर में वैकुण्ठ भी है। तुम मॉडल देखकर आते हो। कैसा रमणिक दिलवाला मन्दिर है। तुम तो जानते हो कल्प–2 यह मन्दिर बनता है। ऐसा ही जो तुम जाकर देखेंगे। कोई–2 मुँझ पड़ते हैं यह सब पहाड़ियां आदि टूट–फूट गई फिर कैसे बनेंगे। यह ख़्यालात करनी न चाहिए। अभी तो स्वर्ग़ भी नहीं है। फिर वह कैसे आवेगा। पुरुषार्थ से सभी बनते हैं ना। तुम अभी तैयारी कर रहे हो स्वर्ग़ में जाने लिए। कोई–2 उलझन में आकर पढ़ाई ही छोड़ देते हैं। बाप कहते हैं इसमें मुँझने की तो बिल्कुल दरकार ही नहीं। वहां सभी कुछ हम अपना बनावेंगे। बिल्कुल ही नया। वह दुनियां ही सतोप्रधान होगी। वैकुण्ठ, वहां के फल–फूल आदि सभी देखकर आते हैं। सोमरस पीते हैं। सूक्ष्मवतन मूलवतन में तो कुछ है नहीं। बाकी यह सभी हैं वैकुण्ठ में। वर्ल्ड की हिस्ट्री जॉगराफी रिपीट होती है। यह निश्चय तो पक्का होना चाहिए ना। बाकी किसको तकदीर में नहीं है तो कहेंगे यह कैसे हो सकता है। हीरे जो अभी देखने में ही नहीं आते। वह फिर कैसे होंगे। पूज्य कैसे बनेंगे। बाप कहते हैं यह खेल बना हुआ है .... क्षत्रय.....। यह सृष्टि के चक्र जानने से चक्रवर्ती राजा बन जाते हो। तुम समझते हो तब तो कहते हो ना कल्प पहले भी आप से मिले थे। हमारा ही यादगार मन्दिर खड़ा है। फिर से स्वर्ग़ की स्थापना होगी। आबू का जो किताब है वह भी ज़रूर सभी को देना चाहिए। यह तो बहुत वैल्युएबुल चीज़ है। पीछे बहुत ही काम में आवेंगे। यह जो तुम्हारा चित्र है इनमें कमाल है। कितना रूची से आकर देखते हैं। सारी दुनियाँ में कहां भी कब न देखा, न कोई ऐसा चित्र बनाकर ज्ञान ही दे सकता है। कॉपी कर न सके। यह चित्र तो है खज़ाना जिससे तुम पदमापदमभाग्शाली बनते हो। तुम समझते हो हमारे कदम–2 में पदम है। पढ़ाई का कदम। जितना योग रखेंगे, जितना पढ़ेंगे उतना ही पदम। एक तरफ माया भी फुल फोर्स में आवेगी। तुम इस समय ही श्याम–सुन्दर बनते हो। सद्गति में तुम सुन्दर थे। गोल्डेन एज्ड। कलियुग में श्याम आयरन एज्ड। हरेक चीज़ ऐसी होती है। यहां तो धरती भी कलराठी है। वहां तो फर्स्ट क्लास धरती होगी। ऐसे राजधानी के तुम मालिक बन रहे हो। अनेक बार बने हो। फिर भी ऐसे राजधानी के मालिक बनने पुरुषार्थ करना चाहिए। पुरुषार्थ बिगर प्रारब्ध कैसे बनेगी। तकलीफ भी कोई नहीं है। मुरली छपती है। आगे चलकर लाखों करोड़ों के अन्दाज़ में छपने लग पड़ेंगी। बच्चे कहेंगे जो कुछ पैसे हैं यज्ञ में लगा देंवे। रख कर क्या करेंगे। आगे चलकर देखना क्या–2 होता है। विनाश की तैयारियां भी देखते रहेंगे। रिहर्सल होती रहेगी। फिर शांत हो जावेंगे। बच्चों की बुद्धि में सारा ज्ञान है। है तो बड़ा सहज। सिर्फ़ बाप को याद करना है। अच्छा, मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप–दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।